आर्य कौन थे ?

[1] आर्य का शाब्दिक अर्थ होता है, श्रेष्ठ कुलीन, स्वतंत्र इत्यादि

2. आर्य लोग भारोपीय - परिवार समुह की भाषा बोलते थे जो अपने परिवर्तित रूप के आज भी सम्पुर्ण युरोप, ईरान और भारतीय उपमाद्वीप के अधिकांश भागो मे बोली जाती है जान पड़ता है कि आर्यो का मुल निवास मध्य एशिया के आल्पस पर्वत के पुर्वी भाग युरेशिया मे कही था।

3. चुकी ऋग्वेद और ईरानी ग्रंथ आवेस्ता मे काफी समानता है साथ ही साथ बोगाजकोई बोगाजकोई अभिलेख जो एशिया माईनर (तुर्की) से पाया गयी है, के आधार पर अधिकांश विद्वानो का मत है कि आर्यो का मुल निवास मध्य एशिया मे बैक्ट्रिया मे कही था

Note बोगाजकोई अभिलेख मे इन्द्र, वरुण, मित्र और नासत्य (अश्वनी कुमार) इन नामक वैदिक देवताओं का वर्णन मिलता

4. भारत आने के क्रम मे आर्य लोग ईरान पहुचे इसकी पुष्टि 1600 BC के ईरान मे पाये गये कस्सी और मितन्नी अभिलेख से होती है जिसमे आर्यो के सम्बन्ध मे चर्चा है।

Note- बोगाजकोई अभिलेख 1400 BC का है।

आर्यों का मुल निवास कहा था ?

आर्य कौन थे कहां से आये थे इन प्रश्नों को लेकर विद्वानो के काफी मतभेद है विभीन्न विद्वानोने आर्यों के मुल निवास के सम्बन्ध मे भिन्न भिन्न मत प्रगट किये है ————

[A] भारत →

[I] मध्यदेश —— राजबली पाण्डेय

[II] ब्रह्मर्षि देश —— गंगानाथ झा

[III] कश्मीर —— एल. डी. कल्ला

[IV] सप्त सैन्धव प्रदेश – डा० अविनाश चन्द्र दास एव सम्पुर्णानन्द

[V] मुलतान स्थित देविका – डी० एस० त्रिवेद

सैन्धव सभ्यता से भिन्न और सैन्धव सभ्यता के बाद आर्य संसकृति आमी थी यदि आर्य भारत के निवासी होते तो वे सर्वप्रथम —

(i) अपने ही देश का आर्यी करणकरते समस्त दक्षिण भारत आज तक आर्य भाषा भाषी नही है।

(ii) उतर पश्चिम मे पाकिस्तान के बालुचिस्तान में | ब्राहुई | 'भाषा का पता चलता है जो आर्य परिवार की भाषा नही थी

यह इस बात का सुचक है कि सम्पुर्ण भारत अथवा कम से कम भारत का एक बडा भाग भाषा की द्रष्टि से अनार्य था यह आर्यों के भारतीय मुल के सिधान्त के विरूध सबसे बडा प्रमाण है।

[B] उतरी ध्रुव → बाल गंगाधर तिलक के अनुसार

[I] आर्यों ने ऋगवेद की रचना सप्त सैन्धव क्षेत्र में की थी। ऋगवेद की एक सुक्त मे दृघकालिन उषा की स्तुति मिलती है, और दिर्घ कालीन उषा उतरी ध्रुव मे ही दिखायी देती है।

[II] महाभारत मे सुमेरू पर्वत का वर्णन है जहां 6 महिने का दिन तथा 6 महिने का रात होती है। यह भी उतरी ध्रुव की ओर संकेत करता है

अतः हम कह सकते है कि आर्य उत्तरी ध्रुव के भी निवासी थे और इसी कारण उनके मस्तिष्क में अपनी मातृभूमि की स्मृति बनी हुई थी

लेकिन तिलक का [ ]

उपर्युक्त मत कोरे साहित्य पर आधारित होने के कारण मान्य नहीं है। स्वयं आर्यों ने ही सप्तसैन्धव प्रदेश को देवकृत योणि (देवताओं द्वारा निर्मित) कहा है। उत्तरी ध्रुव उनका आदि देश होता तो कहीं न कहीं उसका स्पष्ट उल्लेख वे करते

[C]

[I] तिब्बत — दयानन्द सरस्वती

[II] मध्य एशिया - मैक्स मूलर

[III] बैक्ट्रीया — जे. एस. रोड

[IV] पामीर — एडवर्ड मेयर

[V] रूसी तुर्किस्तान -> हर्जफेल्ड

मेयर महोदय का विचार है कि पामीर के पठार से ही इन्डो इरानी जाति पूर्व मे पंजाब तथा पश्चिम मे मेसोपोटामिया की ओर गयी। इस मत का समर्थन ओल्डेनबर्ग तथा कीथ इत्यादि विद्वानों ने की थी।

ब्रेन्डेस्टीन महोदय ने

बताया है कि भारतीय शब्दकोष से पता चलता है कि आर्य मूलतः एक पर्वत के नीचे घास के मैदान में निवास करते थे।

यह मैदान यूराल पर्वत के दक्षिण के स्थित किर्गिज का मैदान था

जो विद्वान एशिया को आर्यों का मूल निवास स्वीकार नहीं करते इनका कहना है कि यूरोपीय भाषा-भाषी परिवार के मुहावरों का प्रमाण यह सिद्ध करता है कि आर्यों का मूल निवास स्थान एशिया की अपेक्षा यूरोप के खोजना तर्कसंगत होगा

[D]

(i) हंगरी - गाईल्स एवं मैक डोनाल्ड
(ii) जर्मन कैंडिनेविया - पेन्का, हर्ट
(iii) बाल्टिक सागर तट - मच मोहोदय
(iv) दक्षिणी रूस - गार्डन चाईल्ड, पीक